योगवासिष्ठः

(महारामायणम्)

भाषानुवादकारः
श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री

सम्पादकौ
श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री
मूलशङ्कर शास्त्री

भूमिकालेखकः संशोधकश्च
मदन मोहन अग्रवाल

।। श्रीः ।।

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
521

योगवासिष्ठः
(महारामायणम्)

हिन्दीभाषानुवादसहितः

विस्तृतविषयानुक्रमणिका–समीक्षात्मकभूमिका–श्लोकानुक्रमणीयुतश्च

(भाग-एक)

University Department of Yoga RU
No/PGDY/ 263
* Library *

हिन्दीभाषानुवादकारः
पण्डित श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री
अध्यक्ष, अच्युतग्रन्थमाला, काशी

*

मूलसम्पादकौ
पण्डित श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री
पण्डित मूलशङ्कर शास्त्री

*

भूमिकालेखकः ग्रन्थसंशोधकश्च
प्रोफेसर मदन मोहन अग्रवाल
एम.ए., पी-एच्.डी., डी.लिट्
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

भूमिका xxxiii-cxxxviii

1 वेदान्त शास्त्र xxxiii

2 योगवासिष्ठ की रचना का समय और कर्त्ता xxxv

3 योगवासिष्ठ के प्रकरण और उपाख्यान xl

3.1 योगवासिष्ठोपाख्यान xl

3.2 वसिष्ठ-राम-संवादोपाख्यान xli

3.3 शुकोपाख्यान xliii

3.4 वसिष्ठोत्पत्ति-ज्ञानप्राप्त्योपाख्यान xliii

3.5 आकाशजोपाख्यान xliv

3.6 लीलोपाख्यान xlv

3.7 कर्कटी-राक्षसी-उपाख्यान xlvi

3.8 इन्दुपुत्रोपाख्यान xlvii

3.9 अहिल्या-इन्द्रोपाख्यान xlvii

3.10 चित्तोपाख्यान xlviii

3.11 बालोपाख्यान xlix

3.12 इन्द्रजालोपाख्यान xlix

3.13 शुक्रोपाख्यान li

3.14 दाम-व्याल-कटोपाख्यान lii

3.15 भीम-भास-दृढोपाख्यान lii

3.16 दाशूरोपाख्यान liii

3.17 कचगीतोपाख्यान liv

3.18 जनक-जीवन्मुक्तोपाख्यान liv

3.19 पुण्य-पावनोपाख्यान lv

3.20 बलि-उपाख्यान lvi

3.21 प्रह्लादोपाख्यान lvii

3.22 गाधी-उपाख्यान lviii

3.23 उद्दालकोपाख्यान lix

3.24 सुरघु-उपाख्यान lx

3.25 भास-विलास-संवादोपाख्यान lxi

3.26 वीतहव्योपाख्यान lxii

3.27 काकभुशुण्डोपाख्यान lxiv

3.28 ईश्वरोपाख्यान lxvi

3.29 अर्जुनोपाख्यान lxvi

3.30 शतरुद्रोपाख्यान lxvii

3.31 वेतालोपाख्यान lxix

3.32 भगीरथोपाख्यान lxix

3.33 चुडाला-उपाख्यान lxx

3.34 किरातोपाख्यान lxxiv

3.35 मणिकाचोपाख्यान lxxiv

3.36 हस्तिकोपाख्यान lxxiv

3.37 कचोपाख्यान lxxv

3.38 इक्ष्वाकूपाख्यान lxxv

3.39 तुर्यावस्था-स्थित-मुनि-उपाख्यान lxxvi

3.40 विद्याधरोपाख्यान lxxvi

3.41 इन्द्रोपाख्यान lxxvii

3.42 मङ्की-उपाख्यान lxxvii

3.43 मनोमृगोपाख्यान lxxvii

3.44 पाषाणोपाख्यान lxxviii

3.45 विपश्चित्-उपाख्यान lxxviii

3.46 वटधानोपाख्यान lxxix

3.47 शवोपाख्यान lxxix

3.48 शिलोपाख्यान lxxix

3.49 ब्रह्माण्डोपाख्यान lxxx

3.50 ऐन्दवोपाख्यान lxxx

3.51 बिल्वोपाख्यान lxxx
3.52 तापसोपाख्यान lxxx
3.53 काष्ठवैवधिकोपाख्यान lxxx
4 योगवासिष्ठ का उद्देश्य lxxx
4.1 आत्मज्ञान lxxxi
4.2 पुरुषार्थ lxxxi
4.3 चित्तशुद्धि lxxxiii
4.4 चित्तशुद्धि हेतु साधन lxxxiii
4.4.1 शम lxxxiii
4.4.2 सन्तोष lxxxiii
4.4.3 साधुसङ्ग lxxxiii
4.4.4 विचार lxxxiv
4.5 अनुभूतिप्रमाणित-आत्मज्ञान lxxxiv
4.6 अद्वैतज्ञान lxxxv
4.7 कल्पनासृष्टि lxxxvi
4.8 मन lxxxix
4.8.1 मन का स्वरूप lxxxix
4.8.2 मन के नाम और रूप xc
4.8.3 मन और ब्रह्म xci
4.8.4 मानसी चिकित्सा xciii
4.8.5 मन एवं सिद्धिप्रद xcv
4.9 जगत् xcviii
4.10 आत्मा ci
4.11 मृत्यु cii
4.12 ब्रह्म cvi
4.13 बन्धन और मोक्ष cix
4.13.1 मोक्ष-प्राप्ति का उपाय cxi
4.13.2 ज्ञान-प्राप्ति के साधन cxii
4.13.2.1 अभ्यास cxiii
4.13.2.2 योग cxiii
4.13.2.2.1 एक तत्त्व का गहन अभ्यास cxiv
4.13.2.2.2 प्राणों का निरोध cxiv
(i) प्राणविद्या cxv
(ii) प्राणायाम cxvi
(iii) वैराग्यादि युक्तियाँ cxvi
4.13.2.2.3 मन का लय और तदर्थ युक्तियाँcxvii
(i) ज्ञानयुक्ति cxviii
(ii) संकल्पत्याग cxviii
(iii) भोगों से विरक्ति cxviii
(iv) इन्द्रियनिग्रह cxix
(v) वासनाओं का त्याग cxix
(vi) अहङ्कार त्याग cxx
(vii) असङ्ग का अभ्यास cxxi
(viii) समभाव का अभ्यास cxxii
(ix) कर्तृत्व का त्याग cxxii
(x) सर्वत्याग cxxiii
(xi) समाधि cxxiii
4.14 ज्ञान की सात भूमिकाएँ cxxiv
4.14.1 (i) शुभेच्छा cxxv
(ii) विचारण cxxv
(iii) तनुमानसा cxxv
(iv) सत्त्वापत्ति cxxv
(v) असंसक्ति cxxv
(vi) पदार्थाभावनी cxxv
(vii) तुर्यगा cxxv
4.14.2 (i) बुद्धिवृद्धि cxxv
(ii) विचारणा cxxv
(iii) असङ्गभावना cxxv
(iv) विलापिनी cxxv
(v) आनन्दरूपा cxxv
(vi) स्वसंवेदनरूपा cxxv
(vii) तुर्यातीतावस्था cxxv
4.14.3 (i) वैराग्यपूर्वक शास्त्राध्ययन cxxv
(ii) शास्त्र-गुरु-सत्सङ्ग cxxvi
(iii) असङ्ग-सामान्य और श्रेष्ठ cxxvi
(iv) अज्ञाननिवृत्तिपूर्वक सम्यग्ज्ञानोदय cxxvi
(v) सुषुप्त-पद cxxvi
(vi) तुर्या cxxvi
(vii) विदेहयुक्ति cxxvii
4.15 कर्मबन्धन से मुक्ति cxxvii
4.16 जीवन्मुक्ति cxxx

वैराग्य प्रकरणम्

(पृष्ठ 1-119)

1. सम्प्रदाय की विशुद्धि के लिए ऋषि-देवसंवाद और उपोद्घात के लिए श्रीरामचन्द्र जी के अज्ञान के निमित्त का वर्णन 1

योगवासिष्ठ वेदान्तशास्त्र के मुख्य प्रमाणित ग्रन्थ प्रस्थानत्रयी = उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीतादि में एक संस्कृत भाषा का बृहत् ग्रन्थ है। बृहद् योगवासिष्ठ में लगभग बत्तीस हजार (३२०००) या तैंतीस हजार (३३०००) श्लोक हैं। यह ग्रन्थ योगवासिष्ठमहारामायण, महारामायण, आर्षरामायण, वासिष्ठरामायण, ज्ञानवासिष्ठ और वासिष्ठ आदि नामों से भी ज्ञात है। यह ग्रन्थ अत्यन्त आदरणीय है, क्योंकि इसमें किसी सम्प्रदायविशेष का उल्लेख नहीं है। भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक इसका पाठ, मूल तथा भाषानुवाद में, चिरकाल से होता चला आ रहा है। जो महत्त्व भगवद् भक्तों के लिए भागवतपुराण और रामचरितमानस का है, तथा कर्मयोगियों के लिए भगवद्गीता का है, वही महत्त्व ज्ञानियों के लिए योगवासिष्ठ का है। सहस्रों स्त्री-पुरुष–राजा से रङ्क तक–इस अद्भुत ग्रन्थ के अध्ययन से प्रतिदिन के जीवन में आनन्द और शान्ति प्राप्त करते रहे हैं। इस ग्रन्थ में प्रायः सभी प्रकार के पाठकों के अनुयोग के लिए सामग्री प्रस्तुत है। जहाँ अबोध बालक भी इसकी कहानियाँ सुनकर प्रसन्न होते हैं, वहा बड़े-बड़े विद्वानों के लिए गहनतम दार्शनिक सिद्धान्तों का इसमें प्रतिपादन है। ऐसा कोई भी प्रश्न नहीं है, जिसका समाधान इसमें प्राप्त न हो। यह ऐसा अद्भुत ग्रन्थ है कि इसमें काव्य, उपाख्यान तथा दर्शन—सभी का आनन्द वर्तमान है। यह सब श्रुतियों का सार एवं माण्डूक्यकारिका का वार्तिक = व्याख्यान ग्रन्थ है। महर्षि वसिष्ठ ने स्वयं कहा है—**यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् । इमं समस्तविज्ञानशास्त्रकोशं विदुर्बुधाः ।।**

योगवासिष्ठ के प्रस्तुत संस्करण में संस्कृत के प्रत्येक श्लोकों की अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा में सुन्दर विवेचना की गई है, जो इसकी प्रमुख विशेषता है। कोई भी व्यक्ति, जो संस्कृत से सर्वथा अपरिचित है, इसका सरलतापूर्वक अध्ययन कर योगवासिष्ठ के गूढ़दार्शनिक स्थलों को हृदयंगम कर सकेगा और उसको मुक्तिलाभ के लिए अन्य साधनों की अपेक्षा नहीं होगी। मोक्षप्राप्ति के उपाय ढूँढने की चेष्टा में व्यक्ति को आत्मानुभव होता है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से व्यक्ति के सम्पूर्ण क्लेशों-दुःखों का अन्त होकर उसके हृदय में अपूर्व शान्ति प्राप्त होगी। अध्ययनार्थी सांसारिक सुख-दुःख की परिधि से बाहर निकलकर परम आनन्द का अनुभव करेगा। मनोयोगपूर्वक अध्ययन करनेवाले निश्चय ही इस जीवन में ब्रह्मज्ञान कर मुक्ति को प्राप्त करेंगे। यह ग्रन्थ ज्ञान का भण्डार है। वेदान्त के ग्रन्थों में यह चमकता हुआ रत्न है। मुमुक्षु के लिए यह ग्रन्थ नित्य स्वाध्याय-योग्य है। ग्रन्थ की मौलिक उपादेयता की दृष्टि से आशा की जा सकती है कि वेदान्त के सच्चे जिज्ञासुओं में इसका विशेष प्रचार-प्रसार होगा।

- **देवीपुराणम्।** हिन्दी टीका सहित। श्री एस.एन. खण्डेलवाल
- **श्रीविष्णुमहापुराणम्।** हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार–श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **श्रीसाम्बपुराणम्।** हिन्दी टीका सहित। श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **सौरपुराणम् (सूर्यपुराणम्)।** हिन्दी टीका सहित। श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **श्रीवराह पुराणम्।** हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार–श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **श्रीपद्ममहापुराणम्।** (1-7 भाग) हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार–श्रीशिवप्रसाद द्विवेदी
- **श्रीविष्णुधर्मोत्तरमहापुराणम्।** (1-3 भाग) हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार–श्रीशिवप्रसाद द्विवेदी

ISBN : 978-93-85005-34-3

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी-221001
csp_naveen@yahoo.co.in